नाम- डा. प्रदीप कुमार राय
एसो. प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग
विषय-राजनीति शास्त्र
कक्षा- बी. ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट - 01,
सत्र - 2019-20
पेपर — 01
अध्याय - 28

दिनांक - 06.05.2020

टॉपिक - व्यक्तिवाद की आलोचना-

व्यक्तिवाद के पक्ष में दिये गये तर्क को आलोचक असत्य और एकांकी मानते हैं जिसे निम्न आधारों पर स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) राज्य एक बुराई नहीं — व्यक्तिवादियों द्वारा राज्य को एक बुराई बताना राज्य के सकारात्मक पक्षों से मुँह मोड़ना है। राज्य द्वारा जीवन की मूल आवश्यकता, सामूहिक कल्याण, विकास, शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था जिस रूप में की जाती है उसकी कदापि अनदेखी नहीं की जा सकती। अरस्तु के अनुसार, 'राज्य जीवन के लिये अस्तित्व में आया और सद्जीवन के लिये अस्तित्व में बना हुआ है।

Teacher's Signature ....

Scanned with CamScanner

(2.) राज्य के कार्य और मानव स्वतंत्रता परस्पर विरोधी नहीं –
राज्य द्वारा किये गये कार्य, निर्मित कानून से व्यक्ति की स्वतंत्रता बाधित नहीं होती बल्कि उसकी अभिरक्षा होती है।
नियंत्रण का अभाव स्वतंत्रता के बजाय स्वच्छन्दता का माहौल पैदा कर सकती है।

(3.) मानवीय कार्यों का विभाजन अव्यवहारिक – व्यक्तिवाद में मानवीय कार्यों को आत्म एवं पर विषयक वर्गों में बांटना अनुचित है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते उसके कार्य का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव समाज पर पड़ता ही है।
बार्कर ने भी कहा है कि, 'व्यक्ति और समाज के विरोध की कल्पना जैसा विचार सही नहीं है।'

(4.) समाज संबंधी दृष्टिकोण त्रुटिपूर्ण – व्यक्तिवाद का मनुष्यों को प्रकृति से स्वतंत्र और स्वयं में परिपूर्ण गुण और शक्ति संपन्न मानना भी गलत है क्योंकि समाज के अभाव में मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास संभव नहीं है।

(5.) मनुष्य सदैव अपने हित का सर्वोत्तम निर्णायक नहीं होता – मनुष्य को

प्रत्येक व्यक्ति में अपने हित को सर्वोत्तम निर्णायक नहीं माना जा सकता है। व्यक्ति की भौतिक, नैतिक, बौद्धिक आवश्यकताओं का उसकी अपेक्षा समाज ही बेहतर निर्णायक हो सकता है। सामाजिक जीवन की जटिलता में समाज एवं राज्य द्वारा ही व्यक्ति को सुखी और सम्पन्न किया जा सकता है।

(6.) प्राणी वैज्ञानिक तर्क असंगत— योग्यतम को सर्वजीवन कहना संगतता से परे है। पशुजगत एवं मानव जगत के मध्य अन्तर को समझना आवश्यक है। मानव समाज के लिये पारस्परिक सहायता और नैतिक सिद्धांत आवश्यक है। हक्सले के अनुसार, 'राज्य एक मानवीय संस्था है और उसे पशुजगत के नियमों से शासित नहीं होना चाहिये। .... (शेष)

(~~शेष~~)